यह ‘‘नारायणी ट्रस्ट’ वैष्णव सम्प्रदाय के महान सन्त श्री श्री 1008 जगन्नाथ जी महाराज स्थान-आसे की कुटिया, अछल्दा व श्री श्री 1008 श्री गुरूजनदास जी महाराज उर्फ अन्धे बाबा स्थान-बहादुरपुर लुहिया, बसरेहर, इटावा की सन्त व आश्रम परम्परा मन्दिरों का जीर्णोद्वार, राष्ट्रसेवा, गौसेवा, संत सेवा, नियमित पूजा पाठ, धार्मिक अनुष्ठान, समाज सेवा, गुरू शिष्य परम्परा को जीवित रखने हेतु समाज सेवी श्री मनीष यादव ‘‘पतरे’’ व सन्तों द्वारा नारायणी ट्रस्ट का गठन किया गया है। ट्रस्ट द्वारा संचालित मन्दिरों की सम्पूर्ण व्यवस्था सम्बन्धित उपसमितियों द्वारा की जा रही है। इसी क्रम में श्री संकट मोचन बालाजी मन्दिर प्रबन्ध समिति (रजि0) द्वारा श्री हनुमान जी मन्दिर, नगला मरदान, कटैयापुर आश्रम व परौली रमायन गौशाला व अन्य मन्दिर व गौशालायें संचालित की जा रही हैं।

 नारायणी ट्रस्ट के उद्देश्य पूर्ति हेतु दो उप संगठनों का भी निर्माण किया गया है। सन्त समाज की सुरक्षा, यज्ञ व धर्म प्रचार हेतु ‘सन्त समाज सुरक्षा परिषद’ का गठन किया गया। इसका संचालन सन्तों द्वारा ही किया जायेगा।

नौजवानों को धर्म, राष्ट्र, समाज व अपने अधिकारों, कर्तव्यांे के प्रति संगठात्मक शक्ति एकत्रित कर गैर राजनैतिक व धार्मिक एवं सामाजिक संगठन का गठन किया गया है जिसका नाम ‘‘नारायणी सेना उत्तर प्रदेश’’ होगा। जिसका संचालन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मनीष यादव ‘‘पतरे’’ द्वारा किया जायेगा जिसका गठन प्रदेश, मण्डल, जिला, विकास खण्ड, न्याय पंचायत व ग्राम पंचायत स्तर तक किया जायेगा।

 **वंशावली**

वैष्णव सम्प्रदाय के महान सन्त श्री श्री 1008 जगन्नाथ जी महाराज स्थान-आसे की कुटिया, अछल्दा व श्री श्री 1008 श्री गुरूजनदास जी महाराज उर्फ अन्धे बाबा स्थान-बहादुरपुर लुहिया, बसरेहर, इटावा जिसके महन्त थे जगन्नाथ दास जी महाराज जी महाराज तपस्या करते थे उनके तीन शिष्य हुयेः-

1. श्री श्री 108 महन्त रघुवीरदास जी महाराज जिन्हांेने अपना आश्रम सरैया में बनाया तथा दूसरे शिष्य हुये। इनके शिष्य हुये श्री श्री 108 महन्त रघुवीरदास जी महाराज के शिष्य श्री श्री 108 सोवरनदास जी महाराज के शिष्य श्री श्यामदास जी महाराज के शिष्य वर्तमान में श्री श्री 108 कोमलदास जी महाराज हैं।

2. श्री श्री 108 महन्त श्री अयोध्यादास जी महाराज आपने अपना आश्रम नन्दपुर गंगेय पर बनाया और तपस्या करने लगे उनके दो शिष्य हुये जिनमें श्री श्री 108 रामसेवकदास जी जो नन्दपुर आश्रम के महन्त बने व श्री भगवानदास जी महाराज जो आश्रम नन्दपुर के अधिकारी बने। इनके बाद भगवान दास जी की स्वर्गवास होने के बाद उनके शिष्य श्री श्री 1008 प्रभूदास जी महाराज श्री महन्त बने।

3. श्री 108 महन्त जगरामदास जी महाराज, आपने अपना आश्रम नगला मरदान कटैयापुर पुल पर बनाया और वही भजन करने लगे आप तीनों गुरूभाई बहुत बड़े संतसेवी एवं समाजसेवी थे। श्री श्री 108 महन्त जगरामदास जी के दो शिष्य हुये, प्रथम महन्त श्री श्री 108 सन्तोषदास जी व अधिकारी श्री श्री त्रिवेणीदास जी महाराज हुये, दोनों महात्माओं के ब्रह्मलीन होने के बाद श्री दयालदास ने अधिकारी के रूप में आश्रम को संभाला उसी समय श्री त्रिवेणीदास जी महाराज के शिष्य श्री ज्ञान सिंह व उनके पुत्र श्री दलवीर सिंह ने आश्रम की व्यवस्थायें संभाली। कुछ समय बाद दयालदास एवं दलवीर सिंह के स्वर्गधाम जाने के बाद उक्त आश्रम की व्यवस्थायें एवं सेवा का कार्य उनके छोटे भाई मनीष यादव ने संभाला और बड़ी निष्ठा के साथ वर्ष 2005 में पुराने हनुमान मन्दिर का जीर्णाेद्वार करवाया। उसी समय वर्ष 2006 में दुर्गा देवी मन्दिर, शीतला देवी मन्दिर, श्री राम जानकी मन्दिर व सरस्वती देवी मन्दिर व लक्ष्मी देवी मन्दिर का निर्माण करवाया। उसके बाद वर्ष 2009 में राधा कृष्ण मन्दिर व वर्ष 2011 में श्री नरमदेश्वर महादेव मन्दिर का निर्माण करवाया। उक्त के बाद सन्त निवास व मन्दिर के सौन्दर्यीकरण का कार्य, बाग, पार्क, एवं सांस्कृतिक मंच का निर्माण करवाया और गौसेवा, सन्त सेवा व समाज सेवा का कार्य एक संस्था बनाकर कर रहे हैं। सनातन धर्म प्रचार यज्ञ पूजा पाठ करना एवं पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुये बाग बगीचा लगाने में यज्ञादि करने में इनकी बड़ी रुचि है। प्रतिवर्ष बुढ़वा मंगल मेला, शिवरात्रि मेला, नवरात्रि महोत्सव, जन्माष्टमी, यज्ञ पूजन आदि नियमित समय पर करवाया जाता है अर्थात आप भगवान श्रीकृष्ण को अपने जीवन का आदर्श मानते हुये राष्ट्रधर्म का भी निर्वाहन व श्रेष्ठ धर्मानुसार कार्य कर रहे हैं।

4. इन सभी सन्तों की कृपा से संस्था द्वारा एक ‘‘चलें स्वर्ग की ओर’’ नामक पुस्तक का प्रकाशन किया गया है जो आपके परिवार को सजग बनायेगा आप पढ़ें और पढ़ायें।

**वंशावली**

वैष्णव सम्प्रदाय के महान सन्त द्वितीय सन्त श्री श्री 1008 श्री गुरूजनदास जी महाराज उर्फ अन्धे बाबा जिन्होंने इटावा तहसील के कस्बा बसरेहर के समीप लुहिया बहादुरपुर में इटावा-फर्रुखाबाद जाने वाले सड़क के किनारे श्री चित्रगुप्त जगन्नाथ जी आदि विराजमान मन्दिर बहादुर लुहिया, में आश्रम बनाया, वहीं पर रहकर वो तपस्या करने लगे, वो बहुत ही अनुभवी भविष्यवक्ता थे उनसे लोग प्रभावित हुये बिना नहीं रहते थे, महाराज जी से प्रभावित होकर जमीदारांे ने मन्दिर के निर्माण में तन-मन-धन से पूरा सहयोग किया था, महाराज जी के चार शिष्य हुयेः-

1. (प्रथम शिष्य)- श्री श्री 108 महन्त देवादास जी महाराज, जो चित्रगुप्त जगन्नाथ जी आदि विराजमान मन्दिर बहादुर लुहिया बसरेहर जनपद-इटावा थे इनके बाद महन्त श्री श्री 108 रामटहलदास जी महाराज के बाद श्री श्री 108 गरीबदास जी महाराज के बाद श्री श्री 108 रामसुन्दरदास जी महाराज जो कि निर्मोही अखाड़ा नागा सन्त हुये। इनके तीन शिष्य हुये प्रथम श्री श्री 108 शीतलदास जी महाराज जो वर्तमान में शिष्य परम्परा के तहत बहादुरपुर लुहिया के महन्त हैं, द्वितीय शिष्य श्री श्री 108 मदनमोहन दास जी महाराज लोहवन मथुरा आश्रम के महन्त हैं। तृतीय शिष्य श्री श्री 108 रामशरणदास जी महाराज वृन्दावन धाम, गुरू शिष्य परम्परा का निर्वाहन कर रहे है।

2. (द्वितीय शिष्य)- श्री श्री 108 महन्त अयोध्यादास जी महाराज जिन्होंने राहिन में आश्रम बनाया, उनके बाद श्री श्री 108 गिरवरदास जी महाराज व उनके बाद श्री श्री 108 धीरमदास जी महाराज व उनके बाद श्री श्री 108 दयाल दास जी महाराज उक्त आश्रम के महन्त बने। श्री श्री 108 दयालदास जी महाराज के तीन प्रमुख शिष्य हुये।

प्रथम शिष्य श्री श्री 108 नरसिंहदास जी महाराज जो राहिन आश्रम के महन्त बने, उनके दो शिष्य हुये कौशल किशोर दास जी को उक्त आश्रम का महन्त बनाया गया और श्री रामशरण दास जी को अधिकारी नियुक्त किया गया जो वर्तमान में हैं।

द्वितीय शिष्य श्री श्री 108 सर्वेश्वर दास जी महाराज जिन्होंने अपना श्री रामजानकी मन्दिर, लौहरई रमपुरा बसरेहर जनपद-इटावा में बनाया। जिन्होंने अपने शिष्य रामकुमार दास जी महाराज को महन्त बनाया जो वर्तमान में हैं।

तृतीय शिष्य श्री श्री मुरलीदास जी महाराज थे, जो कि लौहरई रमपुरा आश्रम के अधिकारी बने। उनके ब्रह्मलीन होने से पहले उन्होंने अपना अधिकार अपने शिष्य श्री श्री 108 शीतलदास महाराज जी को नियुक्त किया जो वर्तमान में हैं।

3. (तृतीय शिष्य)- श्री श्री मथुरादास जी महाराज जिन्होंने श्री चित्रगुप्त जगन्नाथ जी आदि विराजमान मन्दिर बहादुर लुहिया बसरेहर जनपद-इटावा परिसर में ही जीवित समाधि ले ली थी जिनकी आज भी वहां समाधि बनी है।

4. (चतुर्थ शिष्य)- श्री श्री गोमती दास जी महाराज जिन्होंने अपना आश्रम कुम्हावर सैफई में बनाया उनके दो शिष्य हुये

प्रथम शिष्य- श्री श्री 108 प्रेमदास जी महाराज, जिनको कुम्हावर आश्रम का महन्त बनाया। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुये उनके शिष्य श्री श्री 108 पदमदास जी महाराज व उनके शिष्य रामसुन्दर दास जी व उनके शिष्य वर्तमान में श्री श्री 108 महन्त श्री शीतलदास जी महाराज गुरू शिष्य महन्त की परम्परा का निर्वाहन करते हुये आश्रम को संचालित कर रहे हैं।

द्वितीय शिष्य- श्री श्री 108 केशवदास जी महाराज जिन्होंने अपना आश्रम लौंगपुरा सैफई में मन्दिर का निर्माण करवाया और अपने शिष्य श्री श्री 108 हरिदास जी महाराज व उनके शिष्य श्री श्री 108 नरसिंह दास जी महाराज व इनके ब्रह्मलीन होने के उपरान्त श्री श्री 108 महावीरदास जी महाराज को लौंगपुरा आश्रम का महन्त बनाया। इसके उपरान्त श्री श्री 108 महावीरदास जी महाराज ने अपने जीवन काल में बहुत ही धार्मिक कार्य, समाज सेवा करते हुये उद्वव कुटी वृन्दावन में आश्रम का निर्माण करवाया। इसी परम्पराओं को आगे बढ़ाते हुये वर्तमान में श्री श्री 108 शिवरामदास जी महाराज लौंगपुर आश्रम के महन्त हैं और श्री श्री 108 छविराम दास जी महाराज उद्वव कुटी वृन्दावन के महन्त रहते हुये गुरू शिष्य परम्परा का निर्वाहन करते हुये मन्दिर की सुचारू व्यवस्था व देखरेख कर रहे हैं।

 **पंच यज्ञपद्धति (विधि)**

जिससे मानव मात्र ही नहीं बल्कि सभी प्राणियों का भला होता हो पेड़ पौधों का भी भला हो एक ऐस कर्म को यज्ञ कर्म कहते हैं अर्थात अपना भी भला हो समाज की भलाई हो ऐस वे कर्म करें। श्रेष्ठ कर्म कहते हैं जिसमें कोई विरोधाभास न हो जिसके करने से मनुष्य का ये लोक परलोक दोनों सुधर जाते हैं। अतः मनुष्य को पांच यज्ञ नित्य अवश्य करने चाहिये जिससे मनुष्य को धर्म अर्थ करम, मोक्ष चारों पुरसार्थ को सिद्ध हो जिससे सर्वेभन्तु सुखनः सार्थक बने और सदा उन्नति और आनन्दित होते रहें, यही मेरी मुख्य भावना है अपनी भावना को पूरा करने के लिये हम चाहते हैं कि संसार के प्रत्येक मनुष्य को पांच यज्ञ नित्य करना चाहिये। मनु महाराज लिखते हैं किः-

**न्यूषियज्ञं देवयज्ञं भूयंज्ञा च सर्वदा।**

**ब्रह्म यज्ञ नृयज्ञं पित्यस च यथाशक्ति न हृायता।।**

1. ब्रह्म यज्ञ, 2. देवयज्ञ, 3. पित्र यज्ञ, 4. वैश्व यज्ञ, 5. अतिथि यज्ञ

महर्षि दयानन्द ने बनाया पांच यज्ञों ब्रह्मयज्ञ के करने से विद्या, शिक्षा, धर्म, सभ्यता की वृद्धि होती है इन सबकी जरूरत है चाहे हिन्दू हो मुसलमान सिक्ख, ईसाई अर्थात विद्या शिक्षा में कोई विरोेध नहीं है। इसलिये ब्रह्म यज्ञ सबको करना चाहिये।

अग्नि से वायु वृष्टि जल की शुद्धि होकर औषधियाँ शुद्ध होती हैं और आरोग्य वृद्धि बल पराक्रम बढ़ के धर्मार्थ काम मोक्ष का अनुष्ठान निर्विघ्नता से पूरा होता है। इसीलिये इसको देव यज्ञ कहते हैं।

पित्र यज्ञ का फलः- जब वह माता पिता और ज्ञानियों की सेवा करेगा तब उसका ज्ञान बढ़ेगा जिससे सत्या सत्य का निर्णय कर सकेगा और सत्य की ग्रहण कर असत्य को छोड़ के सुखी रहेगा।

बलि वैश्व यज्ञ करने से भोजन के घर का वायु शुद्ध और जो उसमें अदृष्ट जीवों की हत्या होती है उसका प्रत्युपकार होता है।

**अतिथि यज्ञः-** जब तक उत्तम अतिथि जगत मंे नहीं होते हैं उन्नति नहीं होती, उनके सब देश में घूमने से सत्योपदेश करने की पाखण्ड की वृद्धि नहीं होती है और सहज में ही गृहस्थों को सत्य विज्ञान की प्राप्ति होती रहती है। और मनुष्य मात्र में एक ही धर्म स्थिर रहता है बिना अतिथियों के सन्देह निहित नहीं हैं।

**वैष्णव सम्प्रदाय**

वैष्णव सम्प्रदाय भगवान विष्णु और उनके स्वरूपों को ईश्वर मानने वालों का सम्प्रदाय है, वैष्णव धर्म या वैष्णव सम्प्रदाय का प्राचीन नाम भागवत धर्म या पांचरत्र मत है, इस सम्प्रदाय के प्रधान उपास्य देव वासुदेव श्रीकृष्ण हैं, जिन्हें, शक्ति, बल, वीर्य, ऐश्वर्य और तेज इन 6 गुणों से सम्पन्न होने के कारण भगवान या भगवत कहा है भगवत के उपासक भागवत कहलाते हैं। वैष्णव के बहुत से उप सम्प्रदाय हैं जैसे- वैरागी, दास, रामानन्द, बल्लभ, निम्बार्क, माध्व, राधाबल्लभ, सखी और गौड़ीय, वैष्णव का मूल रूप आदित्य या सूर्यदेव की आराधना में मिलता है। वैष्णव सम्प्रदाय के ज्यादातर मानने वाले चन्द्रवंशीय लोग हैं।

वैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत मूल रूप से चार सम्प्रदाय आते हैं। मान्यता अनुसार पौराणिक काल में विभिन्न देवी देवताओं द्वारा वैष्णव महामंत्र दीक्षा परम्परा से इन सम्प्रदायों का प्रवर्तन हुआ है। वर्तमान में ये सभी सम्प्रदाय अपने-अपने प्रमुख आचार्यों के नाम से जाने जाते हैं।

1. श्री वैष्णव सम्प्रदाय जिसकी आद्य प्रवरर्तिका विष्णुपत्नी महालक्ष्मी देवी और प्रमुख आचार्य रामानुजाचार्य हुये जो वर्तमान में रामानुजसम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। इनका मत विशिष्टाद्धैत है।

2. बह्मा सम्प्रदाय जिसके आद्य प्रवर्तक चतुरानन ब्रह्मादेव और प्रमुख आचार्य माधवाचार्य हुये जो वर्तमान में माध्वसम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। इनका मत द्धैत है।

3. रुद्र सम्प्रदाय जिसके आद्य प्रवर्तक देवाधिदेवमहादेव और प्रमुख आचार्य बल्लाभाचार्य हुये। जो वर्तमान में बल्लभसम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। इनका मत शुद्धद्धैत है।

4. कुमार सम्प्रदाय जिसके आद्य प्रवर्तक सनतकुमारगण और प्रमुख आचार्य निम्बार्काचार्य हुये जो वर्तमान में निम्बार्कसम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। इनका मत निम्बार्क है।

वैष्णव धर्म के बारे में सामान्य जानकारी उपनिशदों मंे मिलती है जिसका विकास भगवत धर्म से हुआ है।

वैष्णव धर्म के प्रवर्तक श्रीकृष्ण थे जो वृषक कबीले के यदुवंशी थे, जिनका निवास स्थान मथुरा था, कृष्ण का सबसे पहले उल्लेख छांदोग्य उपनिषद में देवकी के बेटे और अंगिरस के शिष्य के रूप में हुआ।

**पुराण में विष्णु के 10 अवतार माने गये हैंः-**

मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

विष्णु के अवतारों का उल्लेख मत्स्यपुराण मंे मिलता है, शास्त्रों में विष्णु के 24 अवतार माने गये हैंः-

 आदि परषु, चार सनतकुमार, वराह, नारद, नर-नारायण, कपिल, दत्तात्रेय, याज्ञ, ऋषभ, पृथु, मतस्य, कच्छप, धनवंतरी, मोहिनी, नृसिंह, हयग्रीव, वामन, परशुराम, व्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि।

 वैष्णव धर्म में ईश्वर प्राप्ति के लिये सर्वाधिक महत्व भक्ति को दिया है।

ऋग्वेद में वैष्णव विचारधारा का उल्लेख मिलता है, वैष्ण ग्रंथ इस प्रकार हैः-

 ईश्वर संहिता, पाद्यतन्त, विष्णुसंहिता, शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण।

**वैष्णव तीर्थ इस प्रकार हैः-**

बद्रीधाम, मथुरा, अयोध्या, तिरूपति बालाजी, श्रीनाथ, द्वारकाधीश।

वैष्णव संस्कार इस प्रकार हैः-

1. वैष्णव मंदिर में विष्णु राम और कृष्ण की मूर्तियां होती हैं, एकेश्वरवाद के प्रति कट्टर नहीं है।

2. इसके सन्यासी सिर मुडाकर चोटी रखते हैं।

3. इसके अनुयायी दशाकर्म के दौरान सिर मुंडाते वक्त चोटी रखते हैं।

4. ये सभी अनुष्ठान दिन में करते हैं।

5. यह सात्विक मंत्रों को महत्व देते हैं।

6. जनेऊ धारण कर पिताम्बरी वस्त्र पहनते हैं और हाथ में कमंडल तथा दंडी रखते हैं।

7. वैष्णव सूर्य पर आधारित व्रत उपवास करते हैं।

8. वैष्णव दाह संस्कार की रीति हैं।

9. यह चन्दन का तीलक खड़ा लगाते हैं।

10. वैष्णव साधुओं को आचार्य, संत, स्वामी कहा जाता है।